महावाणी - विश्वकल्याण की वाणी

२६/०९/२०२६

ॐ परमात्मने नमः

परमात्मा गुरुजी को नमस्ते। परमात्मा गुरुजी को यह सेवा समर्पण है।

सभी आत्माएं अपने मूलस्वरूप को देखें... सभी अपने मूलस्वरूप स्थिति का अनुभव करें... देखिए, आप आत्मा चमकता हुआ सितारा... ब्रेन के अंदर हाइपोथैलेमस और पिट्यूटरी ग्लैंड के बीच में... आप आत्मा चमकता हुआ सितारा अपने सिंहासन पर विराजमान हैं... देखिए, आप आत्मा के मूलस्वरूप से लाइट और माइट निकल रही है... सभी आत्माएं अपनी लाइट और माइट को देखें... उसका अनुभव करें... उस लाइट को फील करें... जितना हो सके आप आपके मूलस्वरूप को स्पष्टता से देखें... यही आपकी सहज अवस्था है... सभी आपके मूलस्वरूप को गहराई से देखने की कोशिश करें... मूलस्वरूप, मूलस्वरूप, मूलस्वरूप देखते जाइए... मूलस्वरूप...

यह जो मूलस्वरूप की अवस्था है, यही आप आत्मा की ओरिजिनल अवस्था है। जब आप आत्मा का निर्माण किया गया था, वह आपकी ओरिजिनल स्टेट है और यही मूल अवस्था, इसमें आना यही अंतिम स्टेट है। जब आत्माओं की रचना हुई थी, तब सभी आत्माएं मूलस्वरूप अवस्था में रचे थे। जैसे-जैसे आत्माएं शरीर धारण करके अपना पार्ट बजाना शुरू किया, वैसे-वैसे आत्माओं ने अपनी मूलस्वरूप अवस्था को खो दिया। क्योंकि संगम युग में ही इस मूलस्वरूप अवस्था का ज्ञान प्राप्त होता है, बाकी किसी भी युग में आपको आपकी सत्य पहचान, आपको आपकी सत्य अवस्था, उसका ज्ञान कभी प्राप्त नहीं होता; क्योंकि संगम युग में ही परमात्मा आकर आपको आपकी सत्य पहचान देते हैं। बाकी किसी भी युग में ज्ञान देने के लिए परमात्मा नहीं आते।

और इस यूनिवर्स में परमात्मा... जब इस यूनिवर्स की रचना हो गई थी, उसके बाद परमात्मा साकार तन में अभी इस यूनिवर्स में आए हैं, सभी का कल्याण करने। फिर वह इस यूनिवर्स की आत्माएं

हों, या इस यूनिवर्स के शक्तियां हों, या इस यूनिवर्स में आकर अनंत यूनिवर्स का कल्याण करना हो, अनंत यूनिवर्स के सभी शक्तियों का कल्याण करना हो, अनंत यूनिवर्स को पूर्ण रूप से रीसेट करना हो। इस यूनिवर्स का पद्मापदम सौभाग्य है कि परमात्मा इस यूनिवर्स में आए हैं, सभी के कल्याण के लिए। उसमें सभी यूनिवर्स के सभी शिवबाबाओं का भी कल्याण परमात्मा कर रहे हैं। इस यूनिवर्स की आत्माएं जागृत हो जाएं, जल्द से जल्द अपने मूलस्वरूप में आ जाएं। जितना जल्दी आप आपके सत्य स्वरूप में आते जाएंगे, उतना जल्दी आप परमात्मा के पास, उसके यज्ञ में पहुंच जाएंगे। यह यूनिवर्स, अनंत यूनिवर्स में सबसे सौभाग्यशाली है क्योंकि परमात्मा यहाँ अपना कार्य कर रहे हैं। इसलिए सभी आत्माएं जागृत हो जाएं, सभी आत्माएं अपनी कल्याण की यात्रा की शुरूआत करें। अनंत कल्प, अनंत युग, अनंत जन्म आप सभी ने संसार में रहकर संसार ही किया है। अब इस जन्म में, इस संगम युग में - जहाँ पर अनंत यूनिवर्स के रचयिता, अनंत शिवबाबाओं के रचयिता, अनंत शक्तियों के रचयिता, परमात्मा आए हैं, सभी के कल्याण के लिए, सभी के परिवर्तन के लिए, सभी आत्माएं अपना भाग्य ले।

संसार सभी युगों में आपने बहुत किया है, अब यह समय है जहाँ पर आपको आप आत्मा का कल्याण और परिवर्तन संपूर्ण रूप से करने का समय मिला है। आपके पहले भी संसार था, आपके बाद भी संसार रहेगा, पर आप आत्मा ने आपकी कल्याण की यात्रा कहाँ तक की है? सभी अपने से पूछें। आपने इस ज्ञान मार्ग पर चलकर अपने अंदर क्या परिवर्तन किया है? क्या अभी भी आप आपके देह में फँसे हो? आपके देहधारी संबंधों में अटके हो? आपके खान-पान में, वस्त्र-अलंकार में, व्यवस्था में फँसे हो? संगमयुग त्याग करने का युग है। अगर इस ही युग में आपने सभी मायावी अस्तित्वों का, मायावी व्यवस्थाओं का, मायावी खान-पान का त्याग कर पाए, तो ही आपकी कल्याण की यात्रा शुरू हो पाएगी। अनंत जन्म, हर युग में आपने अति मौज की है, इसलिए संगम पर मौज को त्यागना होगा। अगर आप आपका परिवर्तन चाहते हो तो। संगम पर मौज एक ही होती है - आत्मा की पढ़ाई में, आत्मा के अभ्यास में; वही रियल मौज है, वही सत्य मौज है। बाकी संगम में भी अगर आप ज्ञानी तू आत्माएं खान-पान में, प्रोग्राम में, नाचने-गाने में, हँसने-खेलने में अटक गए, तो आप आपका समय बर्बाद कर रहे हो। संगम

में सभी आत्माओ का सदा एक ही लक्ष्य होना चाहिए कि कैसे जल्द से जल्द हम हमारे उस मूलस्वरूप अवस्था में पहुंचें। जब पढ़ाई करने का समय होता है, उस समय बाहरी एन्जॉयमेंट को त्यागना जरूरी होता है, पर अगर आप सोचो कि आपको बाहरी मौज भी करनी है और पढ़ाई भी करनी है और आपको नंबर वन भी लाना है, तो यह कभी भी पॉसिबल नहीं होगा। आपको आपका लक्ष्य पूर्ण रूप से सदैव ध्यान में रखना होगा। एक बार आप आत्मा आपकी उस अवस्था में पहुँच जाएगी, उस अवस्था में ही सारी खुशियाँ हैं, सारी मौज हैं, सारी प्राप्तियाँ हैं। आप अभी भी बाहरी मौज को ढूंढ रहे हो, बाहरी आनंद में आप आपका आनंद समझ रहे हो; पर आप इस बात को भूल रहे हो कि बाहरी मौज, बाहरी सुख-सुविधाएँ, बाहरी आनंद टेम्परेरी है और वह सारे मायावी हैं। अगर आप आत्मा का लक्ष्य आपके परिवर्तन पर सदा रहेगा, तो बाहरी मायावी आवाज़ें, बाहरी मायावी मौज, बाहरी मायावी आनंद के साधन - इन सबसे आप सदा दूर रहेंगे। आप आत्मा को यह ज्ञात नहीं होगा कि आप चाहते हो कि हम कुछ समय के लिए थोड़ा बाहरी एंटरटेनमेंट करें, पर उसमें आप आपका बहुत सारा समय गँवा रहे हो। अगर आप आत्मा मूलस्वरूप में रहकर कोई पार्ट को एंजॉय करते हो, कोई एंटरटेनमेंट करते हो, तो ही आपका समय सफल होगा। पर जब तक मूलस्वरूप का अभ्यास पक्का नहीं है, तब तक आपका मायावी अस्तित्व ही उस एंटरटेनमेंट का भोग लेगा।

इसलिए सभी आत्माएं विचार करें कि क्या परमात्मा जो-जो आपको आपके परिवर्तन के लिए समझ दे रहे हैं, क्या वह समझ आपके अंदर उतर रही है या नहीं, यह आपको कैसे पता चलेगा कि परमात्मा ने परिवर्तन के लिए यह समझ दी है और हममें वह उतरी है या नहीं। इसका एक ही प्रमाण है — जब-जब परमात्मा कोई श्रीमत देते हैं, कोई आज्ञा देते हैं या कब कोई समझ देते हैं, अगर उस समय में आपके मन-बुद्धि-संस्कार में किसी भी प्रकार से कोई भी बात नहीं आती, आप परमात्मा के उस श्रीमत को, उस आज्ञा को, उस समझ को एज़ इट इज़ लेते हो बिना किसी भी मन में विचार के, तब ही वह समझ, वह श्रीमत, वह आज्ञा आपके अंदर पूर्ण रूप से उतर पाएगी। आप आत्मा ने संसार में इतने सारे जन्म लिए हैं, इसलिए आपकी बुद्धि में संसारी ज्ञान का बहुत सारा डेटा पड़ा है, कचरे के रूप में।

आपको यह कचरा साफ़ करना ही होगा। जब तक आपके बुद्धि में बाहरी ज्ञान पड़ा है, तब तक आपकी बुद्धि के अंदर परमात्मा का ज्ञान, परमात्मा की समझ नहीं उतर पाएगी और तब तक आप आपका परिवर्तन नहीं कर सकेंगे। मान लो परमात्मा ने कहा, "यह-यह चीज़ आप शरीर को खिला सकते हैं," और आपके बुद्धि में, आपके संस्कारों में कुछ ऐसी बातें पड़ी हैं जो मन ही मन आपका विचार चले कि, "यह शरीर को खिलाने से शरीर में तकलीफ हो सकती है, बीपी बढ़ सकता है, शुगर बढ़ सकती है।" यह विचार आया, अभी उस क्षेत्र में आपका परिवर्तन कभी भी नहीं हो सकता। क्योंकि परमात्मा इस यूनिवर्स में पहली बार आए हैं और अभी इस यूनिवर्स को पूर्ण रूप से ठीक करके, नया बना के परमात्मा का इस यूनिवर्स का कार्य पूरा होगा। फिर परमात्मा कब इस यूनिवर्स में आएंगे, आपको भी पता नहीं, ना हमें कुछ पता है। इसलिए सभी के पास यह परम सौभाग्य मिला है कि परमात्मा से आप कुछ श्रीमत ले सको, आप कुछ आज्ञा ले सको, आप कुछ समझ ले सको। परमात्मा का समय कभी भी, किसी को भी, किसी भी यूनिवर्स में, कोई भी कल्प में, कोई भी युग में किसी को नहीं मिलता; पर परमात्मा अपना कार्य करने के लिए उतरे हैं, तो सभी आत्माएं — जो-जो आपके परिवर्तन के लिए आपको शिक्षाएं मिलती जाएँगी — आपको उन शिक्षाओं को एज़ इट इज़ अपने अंदर धारण करना ही होगा। अगर आप बिना कुछ विचार चलाए उस बात को अपने अंदर धारण कर पाए, तो आपका परिवर्तन होने बिगर नहीं रह सकता; क्योंकि परमात्मा की एक श्रीमत, एक आज्ञा आपको संपूर्ण रूप से परिवर्तन करने के लिए काफी है। सभी आत्माएं जागृत हो जाएं। अब तक जो कुछ बुद्धि में इकट्ठा किया है, वह सब कचरा है और कचरे के साथ आप ज्ञान को, समझ को अंदर धारण नहीं कर पाओगे, क्योंकि बुद्धि के अंदर उतनी ही कैपेसिटी है। फिर उसके अंदर आपको कचरे को रखना है, या परमात्मा के श्रीमत को, आज्ञाओं को, शिक्षाओं को, समझ को रखना है — यह हर किसी के अपने ऊपर है। किसी भी आत्मा का कभी भी इतना सौभाग्य नहीं होता कि वो परमात्मा को, परमात्मा से कुछ भी श्रीमत ले या आज्ञा ले या परमात्मा के सम्मुख आए। पर इस यूनिवर्स में वह भाग्य, वह सौभाग्य सभी को मिला है। पर हर कोई अपने भाग्य को, सौभाग्य को संभाले और अपना भाग्य ले। परिवर्तन के लिए परमात्मा इस यूनिवर्स में आए हैं।

अनंत कल्प आप आत्माओं ने हर प्रकार के पार्ट बजाए हैं। अभी इस संगम युग में यहाँ पर आपको आपके देहसहित देह के सभी संबंधों को बुद्धि से हटाना है। भल आप संसार में कोई भी कर्म करो, नौकरी-धंधा करो, जो कुछ आपको परिवार चलाने के लिए जरूरी है वह भल करो; पर सच बताएं तो अभी संसार करने का समय नहीं रहा है। फिर वह आत्मा किसी छोटे तन में हो बालक के रूप में, या कोई आत्मा कोई युवा तन में हो, या कोई आत्मा कोई बुजुर्ग तन में हो, पर अभी संसार करने का समय समाप्त हो चुका है। संगम है ही आत्मा को संसार से संन्यास लेने का युग — अपने कल्याण के लिए, अपने परिवर्तन के लिए। पर हर कोई आत्मा की अपनी मर्जी, वो अपने इस जन्म को कैसे सफल करे। आप संसार में रहते, किसी के लिए कितना भी करें, पर संसार में संतुष्टि कभी भी नहीं आएगी क्योंकि संसार मायावी है और यह बात सभी आत्माओं को पूर्ण रूप से तभी स्पष्ट होगी जब आत्माएं यह जानेंगे कि मायावी अस्तित्व भी आपके द्वारा जीता है, क्योंकि हर आत्मा चाहती है कि उसका कल्याण हो, उसका परिवर्तन हो, उसका उद्धार हो; पर उसी का मायावी अस्तित्व संसार जीने की इच्छाएं उत्पन्न करता रहता है। पर अगर आत्माएं अपने दृढ़ संकल्प को लेकर अपनी उस अवस्था में जाने का अभ्यास शुरू करें, तो बहुत जल्द ही आत्माओं के कर्म-बंधन बहुत आसानी से कटते जाएंगे। संसार में सभी चाहते हैं कि उनका कल्याण हो, उनका परिवर्तन हो, कोई नहीं चाहता कि उनका बुरा हो; पर हर किसी के मायावी अस्तित्व के ऊपर है कि किसका मायावी अस्तित्व स्ट्रॉन्ग है और किसका आत्मिक अस्तित्व, मूलस्वरूप का अस्तित्व मजबूत है। जिसकी पावर ज्यादा होगी वही जियेगा, वही मौज करेगा, वही सारे आनंद लेगा। इसलिए आत्माओं को अपनी अवस्था को मजबूत करना होगा।

आत्माओं को अपनी अवस्था कैसी मजबूत कर पाएंगे? परमात्मा से ताकत लेकर, शक्ति लेकर आप आपकी, आप आप आत्मा की उस ताकत को बढ़ा पाएंगे। परमात्मा सभी को शक्ति सदैव प्रदान करते हैं पर आप आत्मा को कॉन्ससियस्ली वह ताकत रिसीव करनी होगी। अगर आप आत्मा का रिसीव करने का मोड बंद है, आप आत्मा की रिसीव करने की फ्रीक्वेंसी अलग है और आप अलग मायावी फ्रीक्वेंसी में, एंटरटेनमेंट में हो, तो आपको परमात्मा से ताकत कभी भी नहीं मिल सकती। आपको

कॉन्ससियस्ली बैठकर परमात्मा से शक्ति लेनी होगी, तब ही आप आत्मा मजबूत हो पाएगी। और जितना-जितना आप आत्मा मजबूत होती जाएगी, आपके मायावी अस्तित्व कमजोर होते जाएंगे और जीत आपकी ही होगी।

इसलिए सभी आत्माएं अपना चिंतन करें कि आप सच में क्या आपका परिवर्तन चाहते हो? क्या सच में आप आपका कल्याण दिल से करना चाहते हो, या अभी भी आपको मायावी संसार में, खान-पान में, व्यवस्थाओं में, मौज में आनंद आ रहा है? आनंद आत्मा को आना चाहिए परमात्मा की श्रीमत पर चलने के लिए, परमात्मा की शिक्षाओं पर चलने के लिए, परमात्मा ने जो ज्ञान दिया है, जो समझ दी है उसको लेकर अपने जीवन में चलने में और परमात्मा से ताकत लेने में, आत्मा के मूलस्वरूप का अभ्यास करने में, ये है सच्ची मौज। तो हर कोई अपने से अवश्य चेक करे कि अगर आप आपके अंदर किसी भी रूप से — आंतरिक हो या बाहरी हो—किसी भी रूप से परिवर्तन चाहते हो, तो क्या आप तैयार हो, आपको परिवर्तन करने के लिए? अगर अभी भी आपको मायावी संसार खींचता है, तो अभी भी आप तैयार नहीं हो। आत्मा की अवस्था इतनी ऊँची बननी चाहिए जो संसार में रहकर भी उस संसार को वो आध्यात्म में परिवर्तन कर पाए। संसार का प्रभाव उस पर ना आते हुए, आत्मा का प्रभाव संसार पर आए और संसार भी अपनी परिवर्तन की यात्रा शुरू करें। ऐसे सभी आत्माओं को बनना चाहिए। जब आत्माएं जागृत होंगी, वो अपनी स्थिति में आती जाएंगी, उनसे मदद संसार को मिलती जाएगी; क्योंकि हर कोई चाहता है परिवर्तित होना, अपने आपको बेहतर बनाना, फिर वह कोई भी अस्तित्व क्यों न हो।

पर सबसे पहले आत्माओं को अपनी जिम्मेदारी लेनी होगी स्वयं के लिए और विश्व के लिए। क्योंकि आप आत्माओं की ही ऊर्जा सारे विश्व में फैली हुई है। जैसे-जैसे आत्माएं अपनी मूलस्वरूप अवस्था में आती जाएँगी, जैसे-जैसे आत्माओं की अवस्था उठती जाएगी, वैसे-वैसे आत्माओं द्वारा जो-जो वाइब्रेशन सारे संसार में फैल गए हैं — जो कि अशुद्ध वाइब्रेशन के रूप में हैं, क्योंकि उनके मायावी अस्तित्वों के द्वारा वो फैल गए हैं — वो सारे अशुद्ध वाइब्रेशन आत्माओं की मूलस्वरूप अवस्था में आने के कारण परिवर्तित होते जाएंगे। आत्माओं का अपने मूलस्वरूप में आना माना संसार का शुद्धीकरण

होते जाना, वाइब्रेशन के रूप में। और जैसे-जैसे संसार में शुद्ध वाइब्रेशन आते जाएंगे, सभी अस्तित्वों के अंदर परिवर्तन आता जाएगा। संसार को परिवर्तन करने के लिए अलग से मेहनत नहीं करनी पड़ेगी, क्योंकि संसार बिगड़ा ही है आत्माओं के अशुद्ध वाइब्रेशन के कारण। आप आत्माएं सकाश में क्या करती हैं? आप कॉन्ससियस्ली बैठकर आप आत्मा से शुद्ध वाइब्रेशन फैलाते हो, फिर आप ही के शुद्ध वाइब्रेशन से, आप ही के द्वारा जो अशुद्ध वाइब्रेशन विश्व में पहले फैले हुए हैं, वो वाइब्रेशन शुद्धि में परिवर्तित होते हैं इस प्रकार से आपका सकाश काम करता है। उस ही प्रकार से आत्मा अपने मूलस्वरूप अवस्था में जैसे-जैसे आती जाएगी, उस मूलस्वरूप अवस्था से जो लाइट और माईट अपने आप निकलती है; उससे संसार में जो अशुद्ध वाइब्रेशन आत्मा के द्वारा किसी भी जन्म में फैले हुए हैं, वो वहाँ पर शुद्ध होते जाते हैं। इसलिए जब आत्माएं जागृत होगी, अपनी जिम्मेदारी लेगी कि, "मेरे परिवर्तन से ही विश्व का परिवर्तन होना है; जो मैंने बिगाड़ा था वो मुझे ही ठीक करना है" — जब कोई आत्माएं अपनी यह जिम्मेदारी उठाएंगे, तब संसार में परिवर्तन आना शुरू हो जाएगा, यह निश्चित है; क्योंकि संसार बिगड़ा ही है अशुद्ध वाइब्रेशन के कारण। संसार को दोष नहीं दे सकते, संसार को गलत नहीं कह सकते। आत्माओं को अपने वाइब्रेशन को जल्द से जल्द शुद्ध करना होगा — अपनी अवस्था में आकर, अपनी अवस्था को ऊँचा उठाकर। जैसे-जैसे आत्माएं अपनी अवस्था में उठती जाएँगी, वैसे-वैसे संसार में परिवर्तन आता जाएगा, संसार में भी आध्यात्मिक क्रांति होती जाएगी; पर यह सब करना होगा आत्माओं को। और अगर कोई आत्मा जो उसने अशुद्ध वाइब्रेशन किसी भी जन्मों में, कोई कल्पों में, संसार में, यूनिवर्स में अपने गलत विचार, गलत संकल्प, गलत बोल, गलत भाव, गलत वृत्ति, गलत कर्मों से फैलाएं हैं, और वो आत्मा अगर यह अशुद्ध वाइब्रेशन को शुद्ध नहीं कर पायी, संगम युग के अंत होने से पहले, तो उस आत्मा का कल्याण कभी भी नहीं हो सकता, उस आत्मा की संपूर्ण सद्गति नहीं हो सकती। फिर उस आत्मा को शरीर छोड़ने के बाद सूक्ष्म रूप में सजाएँ तो खानी ही होंगी, साथ ही साथ अगले कल्प में, उस कल्प के जन्मों में वह अपने लिए बड़ा दुखभरा पार्ट क्रिएट करेगी। इसलिए यह जो समय है, इसमें

सब कुछ क्लियर करना होगा और इस ही संगमयुग में जो तन आपको मिला है, जो देह आप आत्मा को मिली है, उस ही देह में रहकर आपको आपका सारा चुक्तू करना होगा।

इसलिए संगम युग में हर आत्मा को अपनी जो देह मिली है वह बहोत अनमोल है; उस देह को लेकर ही आप आत्मा पुरुषार्थ कर पाएगी। इसलिए आत्मा को देह के संस्कारों में अटकना नहीं है, बल्कि आत्मा को अपने देह के संस्कार आत्मिक स्वरूप वाले बनाने होंगे। सभी के पास जो भी तन अभी है वह बहुत कीमती है। इस तन में रहकर आप आत्मा को जो ज्ञान, समझ, प्राप्ति मिल रही है, उसको जल्द से जल्द आप आत्मा के अंदर उतारते जाना। क्योंकि अगर आप आत्मा का यह तन संगमयुग पूरा होने से पहले और आप आत्मा का पूरा खाता चुक्तू होने से पहले अगर तन छूट गया, तो फिर से नये सिर यात्रा होगी। पर उस देह में आने के बाद आप आत्मा को ज्ञान, समझ, शिक्षाएं कब मिल सकती हैं इसका कोई भरोसा नहीं है और आप आत्मा को परिवर्तन की समझ भी कब मिल पाएगी इसका भी कोई भरोसा नहीं है। इसलिए यह जो समय चल रहा है, सभी आत्माओं को जो-जो ज्ञान-शिक्षाएं मिल रही हैं, परमात्मा से जो ताकत मिल रही है, उसको जल्द से जल्द अंदर धारण करके अपने अंदर परिवर्तन लाना। एक बार आत्मा अपना संपूर्ण परिवर्तन कर पाए, फिर भल शरीर छूट भी जाए कोई हर्जा नहीं, क्योंकि जो करना था वह उसने कर लिया। तो सभी आत्माएं चेक करना कि क्या आपके बुद्धि के अंदर अभी भी संसारी बातों का, मायावी बातों का कचरा कितना पड़ा है? अभी भी आपकी बुद्धि कितनी शुद्ध हुई है? हर कोई अपने बुद्धि की चेकिंग करना, हर कोई अपने संस्कारों की चेकिंग करना। आपके संस्कारों के अंदर कितने मायावी अस्तित्व के संस्कार अभी भी पड़े हैं? आपके बुद्धि के अंदर अभी भी मायावी कचरा कितना पड़ा है? और आपके संस्कारों के अंदर अब तक की ज्ञान मार्ग की यात्रा में आत्मिक स्थिति के संस्कार कितने उतरे हैं? और आप बुद्धि के अंदर परमात्मा के ज्ञान की समझ कितनी उतरी है?

आज के दिन में सभी अपना इन दोनों ही बातों का परसेंटेज चेक करना और आप आत्माएं ही निर्णय लेना आपको कौन सी स्पीड से आगे बढ़ना है। यह ज्ञान प्रैक्टिकल धारणा का है, यह ज्ञान शब्दों का नहीं है। रोज़ आपको आपकी चेकिंग करनी ही होगी और संगम युग अंत होने से पहले आप आत्मा

को आपका पूर्ण परिवर्तन करना ही होगा, वरना इतना ज्यादा पछतावा होगा कि वह आप आत्मा उस सदमे से कभी भी बाहर नहीं आ पाएगी।

इसलिए संगम युग आत्मकल्याण का और आत्मपरिवर्तन का युग है। यह बहुत प्रेशियस समय चल रहा है। सभी आत्माएं ध्यान दें और रोज़ का अपनी चेकिंग रोज़ करें — अब तक कितना परिवर्तन हुए है और अब तक कितना परिवर्तन करना बाकी है। हर कोई अपने से चेक करे, समय बहोत थोड़ा है। सभी आत्माएं जागृत हो जाएं और खुशी-खुशी से अपना परिवर्तन करें। कोई भी आत्मा चिंता में, परेशानी में ना आए। हर कोई ज्ञान को प्रैक्टिकली समझें और आपके पास जो-जो समय है, उस समय को सफल करें। अगर आपने ज्ञान को प्रैक्टिकली समझा, तो ही समझ आपके अंदर उतर पाएगी और आपका परिवर्तन होता जाएगा।

सभी को नमस्ते।

ॐ परमात्मने नमः